

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
						1
2	3	4	5	6		
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

तीनों दक्षिणी महाद्वीपों के जलवायु का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए। तीनों दक्षिणी महाद्वीपों की जलवायु सामान्यतः गर्म है। जी० टेलर ने इनके गर्म महादेश कहा है जिसका कारण है कि समान तौर से यहाँ तापक्रम 21°C से ऊंचा रहता है। जलवायु भौगोलिक तत्वों को प्रभावित करने वाला स्वयं ही एक महत्वपूर्ण भौगोलिक तत्व है। यह प्रत्यक्ष रूप से मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति, कृषि कार्य एवं मनुष्य की शारीरिक एवं मानसिक कार्य क्षमताओं को प्रभावित करता है। तीनों दक्षिणी महाद्वीप पर भी जलवायु का महत्वपूर्ण प्रभाव है। जलवायु भौगोलिक तत्वों से प्रभावित होता है। इन भौगोलिक तत्वों में अक्षांशीय विस्तार, उच्चावच का प्रभाव तथा महासागरीय जलधाराओं का प्रभाव सबसे महत्वपूर्ण है। वायुपेटियों की विस्तार तथा उसका हवार्दिक स्वानान्तरण भी जलवायु को प्रभावित करता है। जलवायु के अंतर्गत मुख्य रूप से तापमान की विस्तार, वर्षा का वितरण, हवा की दिशाएँ एवं आकाश की वायुसंरचना का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार तीनों दक्षिणी महादेशों की जलवायु पर निम्नलिखित विभिन्न तत्वों का प्रभाव पड़ता है।

1) अक्षांशीय विस्तार → इन महादेशों की विस्तार में भूमध्य रेखा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह अफ्रीका महाद्वीप के मध्य से तथा दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी भाग से गुजरती है। अफ्रीका एक ऐसा महादेश है जहाँ से मकर रेखा गुजरती है। इसी के फलस्वरूप इन महाद्वीपों के अधिकांश भाग उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में पड़ते हैं। अफ्रीका का 85% दक्षिणी अमेरिका का 75% तथा ऑस्ट्रेलिया का 80% भाग इस कटिबंध में पड़ता है। फर्क रेखा भी इन महाद्वीपों से गुजरती है। जिस कारण इन महाद्वीपों में बड़ी विस्तृत भूखण्डों पायी जाती हैं। जैसे दक्षिणी अमेरिका में पैन पैराग्वेनिया अफ्रीका में सहारा, कालाहारी ऑस्ट्रेलिया में पार्थीय ऑस्ट्रेलिया का भाग है। बहुत ही कम भूभाग शीतोष्ण कटिबंध में स्थित है। दक्षिणी अमेरिका में कैपहॉर्न अफ्रीका में गुहद्वीप तथा ऑस्ट्रेलिया में हांसमानिया का क्षेत्र इस ताप कटिबंध / समशीतोष्ण कटिबंध के अंतर्गत आते हैं।

2) उच्चावच → जलवायु की दशाओं पर उच्चावच का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। दक्षिणी अमेरिका के

MON	TU	WED	THU	FRI	SAT	SUN
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

MON	TU	WED	THU	FRI	SAT	SUN
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

विस्तृत भाग पर उच्च पर्वत श्रैणियों एवं पठार हैं जिसके कारण उच्च कटिवंश में भी शीतोष्ण तथा अटकिटिका प्रकार की जलवायु भी मिलती है। इन्वाडोर की राजधानी क्विटो भूमध्य रेखा पर स्थित होने के बावजूद वार्षिक औसत तापमान 13°C ही है। ये ऊँची पर्वत श्रैणियों महासागर एवं आंतरिक प्रदेशों के बीच जलवायु वादाओं का काम करती हैं। एंडीज पर्वत के कारण इसके पूर्व स्थित प्रदेशों में उत्तरी पूर्वी तथा दक्षिणी पूर्वी व्यापारिक हवाओं से काफी वर्षा होती है। इस प्रकार शीतोष्ण प्रदेश में एंडीज के पूर्वी भाग बहुत हवा के वाष्पदामा में पड़ते हैं तथा महाद्वीप के पश्चिमी तट पर काफी वर्षा होती है। अफ्रीका में एंडीज की तरह ऊँचे पर्वत नहीं हैं इसलिए यहाँ पर उष्णकटि का प्रभाव उतना व्यापक नहीं है। अफ्रीका की जलवायु पर भी पठारों का प्रभाव पड़ता है। विषुव रेखा पर भी इन ऊँचे पठारों पर बहुत सवाना जलवायु की स्थिति है। एटलस पर्वत भूमध्य सागर के प्रभाव को दक्षिण की ओर सीमित करता है। मघपी आफ्रैलिया में काफी ऊँचे पर्वत नहीं हैं लेकिन इसका प्रभाव महत्वपूर्ण है। अफ्रीका का एटलस पर्वत बहुत ही दूर तक प्रभाव डालता है। मघपी आफ्रैलिया का ग्रेट डिवाइजिंग रेंज जलवायु की दशाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। अगर ऊँचे पश्चिमी भागों को छोड़ दिया जाए तो शीतों ही महाद्वीप में तापमान कम रहता है तथा दैनिक तापान्तर कम होता है।

3) समुद्रीम जलधारा → समुद्री जलधाराओं का प्रभाव भी इन शीतों महाद्वीपों की जलवायु पर स्पष्ट रूप से प्रभाव रहता है। इसी और गर्म जलधाराओं का ऊँचे भागों की तरह यहाँ की जलवायु पर भी परस्पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी एवं पूर्वी भाग में उष्ण भूमध्य रेखीय जलधारा और ब्राजीलियाई गर्म जलधारा प्रभावित होती है जिससे ये तटीय भाग गर्म रहते हैं वहाँ भी काफी वर्षा होती है। इसके पश्चिमी भाग में पैरू की शीतल जलधारा प्रवाहित होती है जिससे यह भाग पूर्व की अपेक्षा अधिक ठंडा रहता है। इसी तरह मैडागास्कार की माल्दुमी के पूर्व में भी फाकलैंड की इसी जलधारा प्रवाहित है।

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
1	2	3	4	5	6	
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

8.00 अफ्रीका के पश्चिम भाग में ब्रिटीश कनारी और
 9.00 ब्रिटीश वैन्युएला की जलधाराओं के बहने से यह भाग
 10.00 हुआ रहता है फलतः कनारी के कारण सहारा और वैन्युएला
 के ढंडी जलधारा के कारण कालाहारी की मरुभूमियों का
 विकास होता है महादेश के पूर्वी भाग में मौजाम्बिक की
 11.00 ठूण जलधारा के बहने से यह भाग गर्म रहता है और
 औसत तापमान 28°C रहता है।

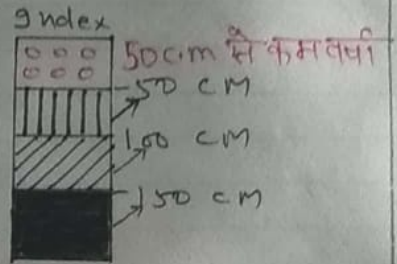
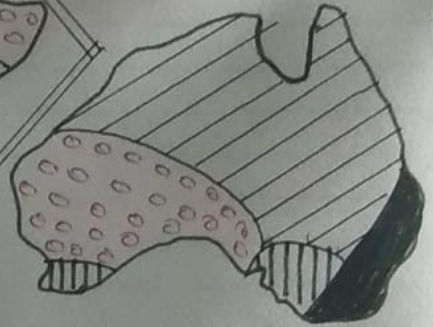
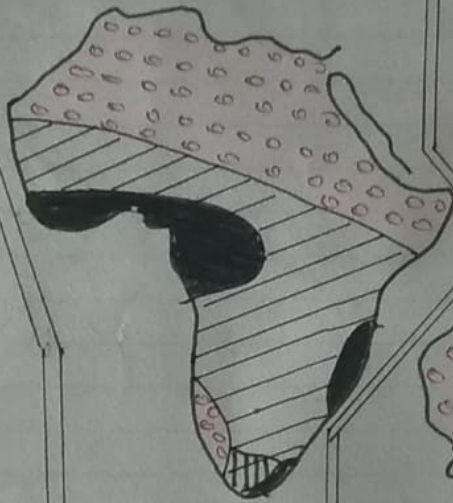
12.00 आपूर्तिमा के समुद्री जलधाराओं का
 पुमाव मरीम भाग तक ही सीमित है इसका विस्तार उत्तर से
 दक्षिण की ओर कम होने से इसके पश्चिम भाग में प्रवाहित
 होने वाली पश्चिमी आपूर्तिमाई ब्रिटीश जलधारा निर्मल और
 1.00 परिवर्तनशील रहती है। पूर्वी आपूर्तिमाई ढंडी जलधारा द्वारा
 2.00 उत्तरी तथा पूर्वी तट पर तापमान उचा रहता है फलतः यहाँ
 वर्षा अधिक होती है।

3.00 ④ स्वामी वायु दबाव पेंटी → स्वामी बंद पेंटियों का भी
 जलवायु की दशाओं पर
 महत्वपूर्ण पुमाव पड़ता है। बंद पेंटियों स्वयं जलवायु का एक
 4.00 महत्वपूर्ण तत्व है। अलाशीम खिबति के अनुरूप दक्षिणी
 अमेरिका एवं अफ्रीका में भूमध्यरेखा के दोनों तरफ निम्न
 5.00 वायुमार् पेंटी खिबत है। 30° अक्षांश के आसपास उत्तर एवं
 दक्षिण दोनों ही गोलार्धों में उच्च मार पेंटियाँ मिलती हैं।
 6.00 दक्षिणी गोलार्ध में खिबत 30° अक्षांश के नजदीक ही उच्च मार
 पेंटियाँ तीनों ही महाद्वीपों में खिबत है। लेकिन उत्तरी गोलार्ध
 की पेंटी गसिक अफ्रीका में मिलती है ये वायुपेंटी सूर्य के
 उत्तरायण और दक्षिणायन की खिबति में तापैतिक उत्तर एवं
 दक्षिण की तरफ खिबर रहती है। जब सूर्य उत्तरायण में रहता
 है तो ये पेंटियाँ लगभग 10° उत्तर की तरफ तथा दक्षिणायन

EVENING में रहने पर लगभग 10° दक्षिण की तरफ खिबत करती है।
 उच्च एवं निम्न वायु मार खिबति में परिवर्तन के फलस्वरूप
 वायु दिशा की एवं वर्षा में भी परिवर्तन हो जाता है।
 जनवरी में सूर्य के उत्तरायण पहुँचने पर भूमध्यरेखा का

NOTES तापम पुमाव लगभग 15° दक्षिणी अक्षांश तक चला जाता
 है अतः 40° दक्षिणी अक्षांश तक तीनों महाद्वीपों का पूर्वी तट
 तथा अफ्रीका का गिनी तट व्यापारिक हवा के पुमाव में

चित्र - तीन दक्षिणी महाद्वीपों के वर्षा का वार्षिक वितरण



NOTES